प्रातःक्लास 31.3.68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करने से तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। और फिर ऐसे विश्व का मालिक बन जावेगे। कल्प–2 तुम ऐसे ही तमोप्रधान सतोप्रधान विश्व के मालिक बनते हो। फिर 84 जन्मों बाद तमोप्रधान बनते हो। फिर बाप शिक्षा देते हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। भक्तिमार्ग में भी तुम याद करते थे; परन्तु उस समय छोटी बुद्धि का ज्ञान था। अभी महीन बुद्धि का ज्ञान है। प्रैक्टिकल में बाप को याद करना है। यह भी समझाना है आत्मा सभी स्टार मिसल है। बाप भी स्टार मिसल है। सिर्फ वह पुनर्जन्म नहीं लेते हैं। तुम लेते हो; इसलिए तुमको तमोप्रधान बनना पड़ता है। फिर सतोप्रधान बनने लिए मेहनत करना है। माया घड़ी–2 भुला देती है। अभी अभूल बनना है। भूलें नहीं करनी हैं। इस भूल के कारण ही तमोप्रधान बने हो। और भी भूलें करते रहेंगे तो और ही तमोप्रधान बन जावेंगे। डायरैक्शन मिलती है अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। बैटरी को चार्ज करो तो तुम सतोप्रधान विश्व का मालिक बन जावेंगे। टीचर तो सभी को पढ़ाते हैं। स्टूडेन्ट में नम्बरवार ही पास होते हैं। नम्बरवार फिर कमाई है। तुम भी नम्बरवार पास होते हो, नम्बरवार मर्तबा पाते हो। कहां विश्व का मालिक, कहो(हां) प्रजा में दास–दासियां। स्टूडेन्ट को जो अच्छे सपूत, आज्ञाकारी, वफादार, फरमानबरदार होते हैं वह ज़रूर टीचर के मत पर चलेंगे। जितना रजिस्टर अच्छा होगा उतना ही मार्क्स जास्ती मिलेगी'; इसलिए बाप भी बच्चों को बार–2 समझाते हैं गफ़लत मत करो। ऐसे मत समझो कल्प पहले भी फेल हुये थे। बहुतों को यह भी दिल में आता होगा हम सर्विस नहीं करते हैं तो ज़रूर हम फेल होंगे। बाप तो रोज़ सावधानी देते हैं। बच्चे सतयुगी सतोप्रधान से कलियुगी तमोप्रधान बने हो। फिर वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉग्राफी रिपीट होगी। सतोप्रधान बनने लिए बाप सहज रास्ता बताते हैं। मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। तुम चढ़ते सतोप्रधान बन जावेगे। चढ़ेंगे धीरे–2; इसलिए भूलो मत; परन्तु माया भुला देती है। नाफरमानबरदार नम्बरवन बना देती है। बाप जो डायरैक्शन देते हैं वह मानते हैं, प्रतिज्ञा करते हैं, फिर भी उस पर चलते नहीं। तो बाप कहेंगे आज्ञा का उल्लंघन कर, अपने वचन से फिरने वाले हैं। बाप से प्रतिज्ञा कर फिर उस पर अमल किया जाता है। बेहद का बाप जैसे बैठ शिक्षा देते हैं। ऐसी शिक्षा और कोई देंगे नहीं। चेंज भी ज़रूर होना है। चित्र भी कितना अच्छा है। ब्रह्मावंशी सो विष्णुवंशी कैसे बनेंगे। यह है नई ईवश्रीय भाषा। उनको भी समझाना पड़ता है। यह है स्प्रीचुअल नॉलेज वा रूहानी शिक्षा कोई देते नहीं। कोई–2 संस्थायें भी निकली हैं जो रूहानी संस्था नाम रखा है ;परन्तु वास्तव में रूहानी संस्था तो तुम्हारे बिगर कोई हो न सके। इमीटेशन तो बहुत हो जाते हैं। यह है बिल्कुल नई बात। तुम बच्चे बहुत थोड़े हो। और कोई यह बातें समझ न सके। सारा झाड़ अभी खड़ा है। बाकी थुर जो शुरू में था वह नहीं है। थुर खड़ा हो जावेगा बाकी टार–टारियां रहेंगी नहीं। वह सभी खत्म हो जावेंगे। यह भी समझने की बात है। बेहद का बाप ही बेहद की समझानी देते हैं। अभी सारी दुनियां पर रावण का राज्य है। यह लंका है ना। वह लंका हिन्दुस्तान से बाहर दिखाते हैं समुद्र के ऊपर है जहां स्टीमर में जाना होता है। बेहद की दुनियां भी समुद्र पर हैं। चारों तरफ पानी ही पानी है। वह हैं हद की बातें। बाप तो बेहद की बातें समझाते हैं। एक ही बाप समझाने वाला है। यह तो पूरा ही जन्म–मरण में आता है। यह भी तुम समझते हो पहले–2 ब्राह्मण हैं वही पहले–2 फिर देवता बनेंगे। और पहले–2 फिर शिवबाबा की पूजा भी शुरू करेंगें। यह सभी बात धारण करने की है। यह पढ़ाई है ना। जब तक नौकरी मिले, पढ़ाई की रिज़ल्ट निकले तब तक पढ़ाई में लगे रहते हैं। उसमें ही बुद्धि चलती है। यह भी रूहानी पढ़ाई है। स्टूडेन्ट का काम है पढ़ाई में ध्यान देना। उठते–बैठते, चलते याद करना है। स्टूडेन्ट के भी बुद्धि में उठते–बैठते, चलते–फिरते पढ़ाई रहती है ना। इम्तहान के दिनों में बहुत मेहनत करते हैं कि कहां नापास न हो जावें। ख़ास सबेरे बगीचे में जाकर पढ़ने बैठते हैं; क्योंकि घर के शहर के वायब्रेशन फिर भी गन्दी होती है। बाप ने समझाया है देहीअभिमानी होने का अभ्यास डालो। फिर टेव पड़ जावेगी। भूलेंगे नहीं। एकान्त की

स्थान तो बहुत हैं। यह बाबा तो कहां जा नहीं सकते। तुम जा सकते हो। शुरू में क्लास पूरा कर तुम सभी पहाड़ों पर चले जाते थे। एकान्त में। अभी दिन–प्रतिदिन नॉलेज गुह्य डीप होती जाती है। बाबा ने समझाया था त्रिमूर्ति भी वास्तव में सिर्फ सा. करने की चीज़ है। सा. करते हो यह कर्मातीत अवस्था में है। कर्मातीत अवस्था के बाद ही तुमको बाप के घर जाना है। कर्मातीत अवस्था हो गई फिर तो याद भी पूरी हो जावेगी। याद करने की दरकार ही न रहेगी। त्रिमूर्ति दिखलाते हैं, इन तीनों का शिव के साथ कनैक्शन रखते हैं, विष्णु और शंकर का भी कनैक्शन रखते हैं। अभी विष्णु का कनैक्शन क्यों? क्या विष्णु को भी कर्मातीत बनने लिए शिव को याद करना है? वह तो कर्मातीत अवस्था को पाकर विष्णु बना है। यह है ही कर्मातीत अवस्था की सम्पूर्णता। कर्मातीत अवस्था में गये, सूक्ष्मवतन में फरिश्ते बन गये। यूं हर्षित भी होते यहां हैं। मिरवा मौत.....है तो फिर भी मनुष्य ही। यूं तो सूक्ष्मवतन क्या है, भल इनका गायन है मूल वतन, सूक्ष्मवतन। इनके ऊपर समझानी देते हैं फिर भी बाप कहते हैं यह सभी सा. करने की चीज़ है। हमारा कनैक्शन है बाप के साथ। कर्मातीत अवस्था को पाया, फिनिश। सीधा चले जावेंगे। हरू बरू(हर बार) वतन में ठहरने की दरकार नहीं है। ऐसे नहीं कि लम्बी जर्नी है; इसलिए बीच में रेस्ट लेते हैं। नहीं। आत्माएं सीधा चली जाती है। यह है तो समझानी देते–2 फिर सभी चीज़ को उड़ा देते हैं। नंगे आये, फिर सीधे नंगे जाना है। पुरुषार्थ भी यह है। आत्मा पवित्र बन जाये फिर यह उड़ेंगे। आत्माएं सूक्ष्मवतन में ठहर क्या करेंगी? दरकार क्या पड़ी है छाया का शरीर लेने? यह ड्रामा में नूँध है जो बाप समझाते रहते हैं। समझाते–2 दुनियां ही उड़ाये देते हैं। बाप कहते यह दुनियां न जीती देखो। कुछ भी न देखो। पिछाड़ी में तो यह सभी भूल ही जाना है। बुद्धि लग जाती है अपने शान्तिधाम और सुखधाम तरफ एमऑब्जेक्ट बुद्धि में रहती है तब अपने राजाई में आ जाते हैं। तो इन चित्रों पर समझाना भी है। फिर बाप कहते हैं आखरीन में यह कुछ है नहीं। समझाने लिए रखे हैं। कोई पूछे विष्णु क्या है? यह एरो किसलिए दिखाया है? क्या विष्णु को भी शिव को याद करना है? वहां तो कोई शिव को याद करता ही नहीं। दुःख में ही सिमरण करते हैं। फिर उनको क्यों दिखाया है? समझाते तो हैं। अभी उड़ा कैसे सकते? गायन भी है। त्रिमूर्ति रोड, त्रिमूर्ति हाउस भी है। उन्हों की फिर टेव पड़ गई है। त्रिमूर्ति तीन शेर देते हैं। यह है ही शेर बकरी घोड़े.....तो कोर्ट ऑफ ऑर्म्स के भेंट में यह देना पड़ता है। बाकी तुम जानते हो वह दुनियां तो कोई है नहीं। अपनी नई दुनियां को ही हम याद करते हैं। सूक्ष्मवतन से क्या काम। बाप को याद करते–2 बाप के पास जाना है। फिर आना है वैकुण्ठ। आते–2 यह सभी उड़ जावेंगे। समझाना पड़ता है रांग क्या है राइट क्या है। बाप ही आकर समझाते हैं कि तुमको और जो सभी सुनाते हैं वह रांग है। मैं जो समझाता हूं वह है राइट। वास्तव में वह कोई सतसंग नहीं है। सत का संग तो एक ही है। सत एक है। बाकी सभी है असत्य। सतयुग में तो सतसंग होता ही नहीं। जब झूठी दुनियां बनती है तब ही सतसंग होते हैं। सत के विपरीत असत्य संग ही कहा जाता है; परन्तु किसको कहो तो समझेंगे नहीं। जब तक सीढ़ी पर न समझाया जाये। गायन भी है सत का संग तारे.....बाप कहते हैं हमने तुमको पार किया फिर नीचे किसने गिराया? रावण। राम को कहा जाता है सत। रावण को कहा जाता है असत्य। द्वापर से लेकर असत्य का संग शुरू होता है। अनेक संग करते रहो, शास्त्र ,गीता आदि पढ़ते रहो ,स्नान करते रहो, कर्म काण्ड करते रहो ,बाप जो सिखलाते हैं वह कोई भी शास्त्र में नहीं है। गीता भी रांग। मनुष्यों ने जो कुछ बनाया है वह रांग, असत्य। यह डिटेल बाप बैठ समझाते हैं। मूल बात तो बाप कहते हैं मामेकं याद करो। यह भी तुम्हारे ही कल्याण के लिए कहता हूं; क्योंकि तुम तमोप्रधान बन गये हो। चक्कर लगाया है ना। यह भी तुम बच्चों की बुद्धि में नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही है। याद उनको रहेगा जो सर्विस करते रहेंगे। सभी को सुनाते हैं। बाप तो समझाते हैं; परन्तु जब किसकी बुद्धि में भी बैठे ना। बुद्धि है नहीं। काठ की पेटी है। कोई की लोहे की, कोई की सोने की भी है।

गोल्डेन एज पीती होंगे तो धारणा भी होंगी। धारणा करने से ही तुम गोल्डेन एज में चले जाते हो। दूसरी बात बाबा समझाते थे म्यूज़ियम आदि खोलते हैं, लिट्रेचर छपाते हैं तो उसमें स्प्रीचुअल यूनिवर्सिटी लिखना भूल जाते हैं। स्प्रीचुअल अक्षर लिखते नहीं है। अभी फिर यूनिवर्सिटी अक्षर तो फिर वर्ल्ड अक्षर क्यों होना चाहिए? दो अक्षर ठीक नहीं है। वर्ल्ड अक्षर निकाल देना चाहिए। यूनिवर्सिटी अक्षर है तो फिर वर्ल्ड अक्षर की दरकार नहीं। स्प्रीचुअल यूनिवर्सिटी लिखना चाहिए। ऐसे–2 मिस्टेक्स भी निकालते रहते हैं। मेहनत होती है ना। अच्छा, जो छपाया उसे भी मनुष्य पूरा समझ नहीं सकते हैं। अच्छा, फिर करैक्ट करो। वर्ल्ड यूनिवर्सिटी दोनों अक्षर लिखने से समझेंगे यह तो लिखने वाले कोई जट है। बाकी हां, वर्ल्ड गॉडफादर लिखना ठीक है। सबेरे बाप को याद भी करते हैं फिर ज्ञान की बातें भी आ जाती है। करैक्शन करनी होती है। नहीं तो कहेंगे बिचारी ब्रह्माकुमारी पढ़ी–लिखी नहीं है। तो ख़्यालात चलती है। ज्ञान बड़ा ही मज़े का है। आदत पड़ जाती है सवेरे उठकर याद करने की और नॉलेज पाने की। टीचर जो बहुत अच्छा पढ़ाते हैं उनकी याद भी आती है ना। फिर उनको प्रेजेन्ट भी देते हैं। तुमको भी पढ़ाने वाला बहुत ऊँच ते ऊँच है। वह सुप्रीम टीचर सभी से ऊँचा है। ड्रामा अनुसार कल्प पहले मिसल आकर पढ़ाते हैं। एमऑब्जेक्ट भी है। टीचर पढ़ाते हैं तो स्टूडेन्ट को एमऑबजेक्ट की याद रहती है ना। यह है वानप्रस्थी में जाने की पढ़ाई। सिवाय एक के और कोई समझा नहीं सकते। साधु–संत आदि तो भक्ति ही सिखलाते हैं। वाणी से परे जाने का रास्ता चाहिए ना। वह बाप ही समझाते हैं। और कोई बता न सके। एक बाप ही सभी को वापस ले जाते हैं। अभी जो तुमको समझाया जाता (है) वह फिर रिपीट होता है भक्तिमार्ग में। अभी तुम्हारी है बेहद की वानप्रस्थ की अवस्था। जिसको कोई भी नहीं जानते। बाप कहते हैं बच्चे, तुम सभी वानप्रस्थी हो। सारी दुनियां की वानप्रस्थी अवस्था है। कोई पढ़े वा न पढ़े। सभी को वापस जाना ज़रूर है। तुम समझते हो जो भी आत्माएं मूलवतन में आवेंगी यह अपने–2 सेक्शन में चली जावेंगी। आत्माओं का झाड़ भी कैसा वण्डरफुल बना हुआ है। सारी दुनियां का चक्र बिल्कुल एक्युरेट है। ज़रा भी फ़र्क़ नहीं। लीवर और सलेण्डर घड़ी होती है ना। लीवर घड़ी बिल्कुल एक्युरेट रहती है। इनमें भी किसका बुद्धियोग लीवर रहता है, किसको सेलेण्डर। कोई का तो बिल्कुल लगता ही नहीं। घड़ी जैसे कि चलती ही नहीं। तुमको तो बिल्कुल एक्युरेट लीवर घड़ी बनना है। लीवर राजाई में जावेंगे। सलेण्डर होंगे तो प्रजा में चले जावेंगे। पुरुषार्थ लीवर बनने का करने का है। राजाई पद पाने वालों के लिए ही कहा जाता है कोटो में कोऊ। वही विजयमाला में पिराये जाते हैं। समझते हैं मेहनत तो बरोबर है। तब ही कहते हैं बाबा घड़ी–(घड़ी) भूल जाते हैं। पहलवानों को पहलवान ही जानते हैं। यहां भी ऐसे ही हैं। महावीर बच्चियां भी है। बच्चे भी हैं। उनमें फिर भी नम्बरवार हैं। अच्छे महारथियों को फिर माया भी अच्छी तरफ तूफान में लाती है। अनेक प्रकार के स्वप्न आदि तूफान आते हैं जिसकी कोई कनैक्शन नहीं, वह भी बुद्धि में आ जावेगा। बाबा समझाते हैं भल माया कितना हैरान करे ,तूफान लावे तुम खबरदार रहना। कोई भी बात में हराना नहीं। मंसा में तूफान भल आवें कर्मइन्द्रियों से न करना है। तूफान आते ही हैं गिराने लिए। पहले–2 तूफान तो इनको ही आवेंगे। सबसे आगे है ना। ज़रूर इनको अनुभव होगा तब तो ओरों को समझा सकेंगे। लिखते हैं बाबा यह होता है। हां बच्चे, यह भिन्न–2 प्रकार के तूफान आवेंगे। माया की खूब लड़ाई चलती है। लड़ाई न हो तो पहलवान कैसे बनेंगे? जब कोई कुस्ती लड़ी जाती है, बड़ों'2 की हाती है तो बहुत मनुष्य देखने आते हैं। माया की तूफान की परवाह नहीं करनी चाहिए; परन्तु चलते–2 कर्म इन्द्रियों के बस हो झट गिर पड़ते हैं। फिर प्वाइन्ट् तुम्हारे खाते बढ़ जाती है। बाप तो रोज़ समझाते हैं। कर्म इन्द्रियों से कोई विकर्म न करना। मुख से कुछ भी न करना। यहां तो बहुत बेकायदे चलन चलते हैं। समझाया जाता है बेकायदे कर्तव्य करना छोड़ेंगे नहीं तो पाई–पैसे

का पद पा लेंगे। अन्दर में समझते हैं हम नापास ही होंगे। जाना तो सभी को है ना। बाप कहते हैं मेरे को याद करते हैं वह याद भी विनाश को नहीं पाते। याद (ज्ञा)न से करते हैं। थोड़ा भी याद करने से स्वर्ग में आ जावेंगे। थोड़ा याद करने अथवा बहुत याद करने से क्या–2 पद मिलेगा वह भी तुम समझ सकते हो। कोई भी छिप नहीं सकते। जान सकते हैं, कौन क्या–2 बनेंगे; इसलिए बाबा कहते हैं तुम पूछ सकते हो बाबा से कि हम इस समय अगर हार्टफेल हो जावें तो किस पद को पावेंगे? खुद भी समझ सकते हैं, पूछ भी सकते हैं। आगे चल आपे ही पूछेंगे। समझेंगे विनाश तो सामने खड़ा है। तूफान, बरसात, नेचर कैलेमिटीज़ आदि कोई पूछ कर थोड़े ही आते हैं। रावण तो बैठा ही है। रावण को दुश्मन समझ मारते हैं। मारते ही आते हैं। इससे भी समझते नहीं हम दुश्मन के बस हो तमोप्रधान बनते गये हैं। तुम बच्चों के सिवाय और कोई तो समझ भी न सके। झोली में ख़ज़ाना भी भर सके ना। छेद से सारा बह जाता है। धारणा हो इसके लिए गोल्डेन एज्ड बुद्धि चाहिए। बच्चों की धारणा बहुत कम है; इसलिए बाबा रड़ियां मारते हैं, म्यूज़ियम आदि खोलते हैं। सर्विसएबुल ..... चाहिए। वह मिलती नहीं। मांगनी करते रहते हैं अच्छी टीचर चाहिए। मैं फिर लिखता हूं तुम बुक–बसर हो, 3मास, 6मास, 12मास टीचर मिला अभी तक तुम सीखे नहीं हो! कुछ तो रिज़ल्ट निकलनी चाहिए। कुछ तो पास हो निकलनी चाहिए। समझो 20 आते हैं उनसे 3–4 तो पास होनी चाहिए 12मास में। कोई पास दो, कोई पास 4–6 निकलते रहे तो बहुत टीचर बन जाये। तो मीठे–2 बच्चों जिनको पढ़ा रहा हूं उन्हों की बुद्धि में आता है। हैं तो बेहद के सभी बच्चे; परन्तु पढ़ने वाले थोड़े हैं। आई. सी. एस. बड़ा इम्तहान है तो उनमें भी थोड़े पास होते हैं। यह भी बड़ा इम्तहान है। इसमें जो पास होते हैं तो पद भी ऊँच पाते हैं। राजाएं तो...ऐसे समझदार चाहिए ना तो रैयत को (भी) ठीक रीति सम्भाल सके। बच्चे जानते हैं बाप आकर पढ़ा (कर) हमको स्वर्ग का मालिक सतोप्रधान बनाते हैं। तुम जानते हो हम सतोप्रधान थे। सो तमोप्रधान बने हैं। फिर बाप को याद करने से हमको सतोप्रधान बनना है। पतित–पावन बाप को ही याद करना है। बाप कहते हैं मनमनाभव। यह तो वही गीता का एपीसोड है। डबल सिरताज बनने की ही गीता है। बनावेंगे तो बाप ना। तुम्हारी बुद्धि में सारी नॉलेज आ जाती है। जो अच्छी बुद्धि वाले हैं उनके पास अच्छ(छी) धारणा होती है। कम बु(द्धि) वाले किसको समझा नहीं सकते हैं। तो बच्चों को पुरुषार्थ अच्छी रीत करना चाहिए। ग़रीब भी ऊँच पद ले सकते हैं। जैसे– यह सिपाही है। इनको तो बड़ी खुशी होगी हम सिपाही से क्या बनते हैं। पाई–पैसे की सिपाही से हम विश्व का मालिक बनते हैं। इतनी खुशी रहनी चाहिए। ऐसे दैवी गुण भी धारण करनी है। देखना है कोई को तंग तो नहीं करते हैं। बाप तो बहुत ही प्यार से समझाते हैं। अपना कल्याण चाहते हो तो दैवी गुण भी धारण करो। किसके अवगुणों को देखो ही नहीं। आगे चल कर तुम्हारा नामाचार ज़ोर से होता जावेगा। कहेंगे यह ज्ञान तो वण्डरफुल है। अभी भी कोई–2 कहते हैं ना हमारी तो आँखें ही खुल गईं हैं ; इसलिए बच्चों को सभी प्वाइन्ट धारण करनी चाहिए। नोट करना चाहिए। बाप कब अनन्य बच्चों में भी प्रवेश कर ज्ञान देते हैं। बाकी इसको सर्वव्यापी नहीं कहेंगे। कब बाप की, कब इनकी मुरली चलती है। दोनों ही इस तख़्त पर बैठे हैं। जैसे–गुरू लोग अनन्य चेले के बाजू में बैठ जाते हैं ना। यह ब्रह्मा भी उनका अनन्य है। त्रिमूर्ति ब्रह्मा भी कहते फिर देव–देव महादेव भी कह देते हैं। ऊँच तो ब्रह्मा है। शंकर को तो बाबा ने उड़ाय दिया। बाप कहते हैं मैं न विनाश करता हूं, न ..... हूं। यह तो बाप है। सूक्ष्मवतन में बैल भी कोई है नहीं जिस पर सवारी की है। यह भी रांग है। न शंकर (को) जटाएं आदि हैं, न धतूरा आदि खाते हैं, न भां(ग) पीते हैं। शंकर–पार्वती की बात ही नहीं। तमोप्रधान मनुष्यों से बिच्छू–टिण्डन ही पैदा होते हैं। अच्छा, मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते, नमस्ते।